गिजुभाई की 'एकल शिक्षक पद्धति' की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता

अस्मा *

शिक्षक ही बालक को क्रियाशील, कल्पनाशील और प्रयोगशील बनाता है। एक शिक्षक का कार्य एक माली से भी बढ़कर है क्योंकि उसे वृक्ष से पहले बीज के दोषों को दूर करके केवल उसे अनुकूल वातावरण ही उपलब्ध नहीं कराना होता है बल्कि सामाजिक तथा नैतिक वातावरण में सम्माननीय जीवन जीने के योग्य बनाकर एक प्रेरक, दृष्टा और अवलोकनकर्ता तीनों का कार्य कुशलता के साथ करना आवश्यक होता है। इस कार्य में एकल शिक्षक पद्धति एक स्तम्भ का कार्य कर सकती है।

बाल-केंद्रित शिक्षा के प्रणेता गिरिजा शंकर भगवान जी बधेका जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में गिजुभाई के नाम से ख्याति प्राप्त की। इन्होंने बालशिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों में अपना जीवन समर्पित करने के साथ-साथ अध्यापकों के प्रशिक्षण के नए कार्यक्रमों का उन्मेष किया और प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक तथा शिक्षार्थी सभी को संज्ञान में रखकर कई शिक्षण-पद्धतियों पर शोध किया। जिसमें बालशिक्षा के लिए 'एकल शिक्षक पद्धति' या 'सतत शिक्षक पद्धति' वर्तमान प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन दृष्टिकोण शिक्षकों में उत्पन्न कर सकती हैं जो शिक्षा को एक मजबूत नींव देकर उसे बोझिल होने से रोकेगी, क्योंकि वर्तमान शिक्षक समुदाय कुंठित होता जा रहा है इसलिए नए शैक्षिक प्रयोगों को शिक्षा में लागू करने की आवश्यकता है। गिजुभाई ने सुन्दर और खुशहाल राष्ट्र की कल्पना के लिए बाल-सम्मान के महत्व को स्वीकारते हुए उनमें शिक्षा के प्रति जिज्ञासा, उत्साह, निडरता और मित्रता जैसे गुणों के समावेश को आवश्यक बताया है। गिजुभाई द्वारा उन्मेषित 'एकल

* *शोध छात्रा,* शिक्षा संकाय, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस. एस. जे. परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड

शिक्षक पद्धति' प्राथमिक स्तर के शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए एक प्रगतिशील कदम है। यह पद्धति नई कक्षा में उत्सुकता और शिक्षकों में स्फूर्ति उत्पन्न करके उनकी ज्ञान शक्ति में अभिवृद्धि कर सकती है। एकल शिक्षक पद्धति को वर्तमान की शिक्षा परिस्थितियों में प्राथमिक स्तर पर लागू करके ट्यूशन जैसी मुसीबत से भी शिक्षार्थियों और शिक्षकों को बाहर निकाला जा सकता है।

गिजुभाई मानते हैं कि इस शिक्षक पद्धति द्वारा बाल्यकाल का निर्माण उसी प्रकार होता है जिस प्रकार कुम्हार कच्ची मिट्टी को एक सुंदर स्वरूप देकर उपयोगी वस्तु का निर्माण करता है। इन्होंने एकल शिक्षक पद्धति में प्राथमिक स्तर पर अनेक शिक्षकों की तुलना में एक ही शिक्षक द्वारा शिक्षण की प्रक्रिया को चलाना अधिक महत्वपूर्ण माना है। यह पद्धति शिक्षक को शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत शक्ति और उनकी विषय में रुचि-अरुचि से अवगत कराएगी, साथ ही पाठ्यक्रम की उपयुक्तता, अनुपयुक्तता अर्थात् पाठ्यक्रम के निरर्थक विषयों की जानकारी भी देगी, इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम प्राप्त अवधि की तुलना में पर्याप्त है अथवा कम या अधिक है, का ज्ञान भी शिक्षक प्राप्त कर सकेगी और पाठ्यपुस्तकों के क्रमिक होने का ज्ञान होने से शिक्षक पाठ्यपुस्तकों में उचित सुधार का सुझाव भी दे सकता है।

एकल शिक्षक पद्धति में एक शिक्षक ही प्रथम कक्षा से चौथी-पाँचवी कक्षा तक शिक्षण कार्य करते हुए शिक्षार्थियों का चहुँमुखी विकास करता है जिससे प्रत्येक विषय की निरंतरता बनी रहती है। शिक्षक को शिक्षण कार्य के लिए लंबा समय मिलने के कारण वह अपनी शिक्षण विधियों में नए-नए प्रयोग करके सुधार कर सकता है जिससे शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों के ज्ञान और शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होने से शिक्षण प्रक्रिया रुचिकर बन जाती है और प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवसर उपलब्ध होने के कारण अपने लक्ष्य को तीव्र या मंद गति से प्राप्त कर लेगा, क्योंकि शिक्षक प्रत्येक शिक्षार्थी को आगे बढ़ने के लिए समान अवसर देता है।

एकल शिक्षक पद्धति में 'एकल शिक्षक' का अर्थ है – शिशु कक्षा से चौथी-पाँचवीं कक्षा तक उन्हीं शिक्षार्थियों को चार-पाँच वर्षों तक सभी विषयों को पढ़ाने वाला शिक्षक और इन चार-पाँच वर्षों का कार्य पूरा करके शिक्षक का फिर पहली कक्षा में लौट आना। अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों में 'कक्षा-शिक्षण पद्धति' को अपनाया गया है जिसमें एक शिक्षक, एक ही कक्षा को सभी विषय पढ़ाकर वर्ष के अंत में परीक्षा द्वारा उनका मूल्याँकन करता है और फिर शिक्षार्थी अगली कक्षा में चले जाते हैं, शिक्षक वहीं रह जाता है। उसके सामने एक नई कक्षा आती है, ऐसे शिक्षार्थी जिनके ज्ञान, क्षमताओं, योग्यताओं के बारे में उसे कुछ मालूम नहीं होता। जिन शिक्षार्थियों को वह वर्ष भर में जान पाता है वे नए शिक्षक के पास पहुँच जाते हैं जिसकी स्थिति पूर्व शिक्षक के समान होती है। लेकिन अगली कक्षा में गए शिक्षार्थियों के लिए भी नए शिक्षक को न जानने के कारण असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

'विषय-शिक्षक पद्धति' अधिकतर माध्यमिक कक्षाओं में चलती है, जिसमें एक ही कक्षा को अलग-अलग विषयों के शिक्षक पढ़ाते हैं लेकिन समस्या तो वही है नई कक्षा में नया शिक्षक।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को कई शिक्षकों की तुलना में एक ही शिक्षक को समझने और उसके लम्बे परिचय की आवश्यकता होती है तभी शिक्षक और शिक्षार्थी एक-दूसरे को जान पाएँगे और जब उनके बीच कोई झिझक नहीं होगी तभी वे अच्छा सीख और सिखा पाएँगे।

वर्तमान में कुछ प्राथमिक विद्यालयों में एक ही शिक्षक प्रथम कक्षा से पाँचवी कक्षा तक शिक्षार्थियों के संपर्क में तो रहता है लेकिन उसका उद्देश्य केवल प्रतिदिन की शिक्षार्थियों की उपस्थिति का विवरण रखना होता है। वह शिक्षण कार्य नहीं कर सकता है क्योंकि उसके पास शिक्षण के लिए समय ही नहीं बचता है जिसके कारण शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच कोई 'शिक्षण-अधिगम अंत:क्रिया' नहीं हो पाती है। इस प्रकार समस्या वहीं की वहीं रह जाती है।

बाल्यकाल निर्माण की अवस्था है इस अवस्था में यह आवश्यक होगा कि शिक्षार्थी की ज़रूरतों, सीखने के तरीकों को सावधानी से समझा जाए। निरंतर एक शिक्षक के संपर्क में आने पर यह संभव हो सकेगा।

दूसरी ओर, यदि एकल शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य कराया जाएगा तो वह बालकों को अच्छी तरह जान जाएगा कि जब बालक पहली कक्षा में आया था तो कैसा था? और पाँचवी कक्षा तक उसमें क्या परिवर्तन आए तथा उसके अन्दर कौन-सी पूर्व-योग्यताएँ, क्षमताएँ और रुचियाँ विद्यमान हैं, वह भविष्य में किस क्षेत्र में प्रगति कर सकता है इत्यादि। एकल शिक्षक बालक के लिए विकास मार्ग को निर्मित करके उसे उचित दिशा-निर्देश दे सकता है जिससे बालक को आगे बढ़ने में आसानी होगी।

वर्तमान कक्षा-शिक्षण में यदि किसी शिक्षार्थी को कोई विषय समझ नहीं आ रहा है या शिक्षार्थी की उस विषय में रुचि नहीं है, फिर भी अगली कक्षा में उसे उस विषय को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ना पड़ेगा, फिर चाहे वह फ़ेल ही क्यों न हो जाए। क्योंकि अगली कक्षा में उसे नया शिक्षक मिलेगा जो शिक्षार्थी की रुचि के बारे में कुछ भी नहीं जानता है। लेकिन यदि एकल शिक्षक या सतत-शिक्षक, शिक्षण कार्य संभालता है तो उसे शिक्षार्थियों के बारे में पूर्ण जानकारी होगी जिसके कारण वह बता सकता कि अमुक शिक्षार्थी की किस विषय में रुचि नहीं है। अतः उस शिक्षार्थी को वह विषय न पढ़ाया जाए। इसके लिए पाठ्यक्रम को लचीला बनाया जाना चाहिए, तभी वास्तव में एकल शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों की परेशानियों को कम किया जा सकता है और इस अरुचिकर विषय को छोड़कर बालक अपनी रुचि के विषय को चुन सकेगा।

दूसरी ओर, शिक्षक को नए आए शिक्षार्थियों को पढ़ाने में मज़ा नहीं आता है, क्योंकि शिक्षार्थी भले ही नए होते हैं, लेकिन शिक्षक के लिए विषय वही पुराने, जो वह वर्षों से पढ़ाता चला आ रहा है। उसे कुछ भी पढ़ाने के लिए नया नहीं मिलता है वह सिर्फ़ रोज़ का काम निपटाता है। कक्षा में उसे बौद्धिक आनंद नहीं मिलता है जिसके कारण शिक्षक, कक्षा में अपनी प्रतिभा और कुशलता का प्रदर्शन भी नहीं कर पाता है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षार्थियों की अभिलाषा तथा उत्सुकता पूरी नहीं हो पाती है। वे निस्तेज और रसहीन हो जाते हैं तथा उनका उद्देश्य सिर्फ़ परीक्षा पास करना बन जाता है। नए प्रयोग

करना या सीखना नहीं। वे विद्यालय से भाग निकलने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि न तो उन्हें कक्षा अच्छी लगती है और न ही शिक्षक। ऐसी वर्तमान शिक्षण-पद्धति में शिक्षक, शिक्षार्थी के क्रमिक विकास और ज्ञान वृद्धि के साथ कोई संबंध नहीं रखता है क्योंकि जो शिक्षक शिक्षार्थियों को पहले से जानता नहीं है वह उनके ज्ञान और क्षमताओं का विकास कैसे कर सकता है? ऐसी स्थिति में शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों शुरू से अंत तक उलझे रहते हैं।

जबकि यदि एकल शिक्षक पद्धति को वर्तमान में प्रयोग किया जाए तो शिक्षक को हर दिन नया पढ़ने और पढ़ाने को मिलेगा। वह पढ़ाने में रुचि लेगा। वह शिक्षार्थियों की उत्सुकता को पूरा करके उनमें नया सीखने के लिए प्रेरणा भरेगा। वह उनके चारित्रिक, मानसिक और शारीरिक विकास को एक नई दिशा दे सकता है। एकल शिक्षक, शिक्षार्थियों को पर्याप्त समय देता है उन्हें पहचानता है जो एक सच्चे शिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण होते हैं। शिक्षक और शिक्षार्थियों के लंबे समय तक साथ रहने के कारण शिक्षार्थी विश्वासपूर्वक अपने हृदय को खोल देते हैं और अपने विकास में स्वयं सहयोग देने लगते हैं। शिक्षार्थी, शिक्षक से कुछ पूछने या बताने में झिझकता नहीं है दोनों के बीच पिता-पुत्र जैसा संबंध बन जाता है। यही संबंध प्राचीनकाल में गुरुकुलों में बनते थे जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इसी स्नेह-बंधन के कारण गुरुकुलों में अनुशासन रहता था।

वर्तमान समय में प्राथमिक विद्यालयों में अनुशासनहीनता एक बड़ी समस्या बन गई है। 'एकल शिक्षक पद्धति' द्वारा वर्तमान प्राथमिक कक्षाओं में अनुशासन सफलतापूर्वक स्थापित किया जा सकता हैं। वर्तमान शिक्षण पद्धति में हर वर्ष पाठ्यपुस्तकों के बदलने के साथ-साथ शिक्षक भी बदल जाते हैं। पूर्व-कक्षा का प्रारंभिक ज्ञान वहीं रह जाता है और नई कक्षा में नए शिक्षक द्वारा पाठ्यपुस्तकों के अनुसार नए ज्ञान का प्रबंध किया जाता है। जिससे शिक्षक, शिक्षण की निरंतरता को कायम नहीं रख पाते और शिक्षण कार्य एक नए सिरे से शुरू किया जाता है। परंतु एकल शिक्षक पद्धति में शिक्षक, शिक्षण की निरंतरता और उसकी रोचकता बनाये रख सकता है। जैसे – यदि शिक्षक को भारत का पूरा भूगोल पढ़ाना है तो वह चार-पाँच वर्षों के विषय संकलन के हिसाब से उसे विभाजित करके, बच्चों की योग्यताओं को ध्यान में रखकर रोचक विधि से, पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ते हुए पढ़ाएगा जिससे शिक्षार्थियों को भूगोल का क्रमिक रूप से ज्ञान प्राप्त होगा और उनमें नया जानने की उत्सुकता तथा रोचकता उत्पन्न होगी। इस प्रकार सतत शिक्षण में पढ़ने और पढ़ाने में आनंद आएगा और शिक्षक तथा शिक्षार्थी सीखने-सिखाने की राह पर निरंतर अग्रसर रहेंगे।

एकल शिक्षक जब चार-पाँच वर्षों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को लगातार पढ़ाएगा तो वह बता सकता है कि पाठ्यक्रम के निरर्थक विषय कौन से हैं, लगातार पूरी अवधि में वह पाठ्यक्रम पूरा हो सकता है या नहीं। पाठ्यपुस्तकों के सही क्रम तथा उसके स्तर का ज्ञान अनुभव के आधार पर तुलना करके प्राप्त कर लेगा। जिससे वह पाठ्यपुस्तकों को बच्चों की ज्ञान शक्ति के अनुसार नए क्रम में संजोकर प्रारंभ में उनके

न समझने योग्य बातों को अगली कक्षा के पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कर देगा। यदि एकल शिक्षक को अवसर दिया जाएगा तो वह पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन का सुझाव भी दे सकता है।

एकल शिक्षक पर पाँच वर्षों के शिक्षण की पूरी ज़िम्मेदारी होने से वह बेहतर काम करेगा। पाँच वर्षों की लम्बी अवधि शिक्षक को मिलने के कारण वह अलग-अलग विषयों को रोचक तरीके से, अपनी शिक्षण विधियों में सुधार करके शिक्षार्थियों को पढ़ाएगा क्योंकि पाँच वर्षों के अंत में उसे परिणाम प्रस्तुत करना होता है। लेकिन वह शिक्षार्थियों का 'सतत मूल्यांकन' स्वयं के निर्धारित समय पर शिक्षार्थियों के अधिगम के आधार पर करता रहता है। अतः एकल शिक्षक पढ़ाने की प्रभावशाली विधियों को खोजेगा ताकि उसे और शिक्षार्थियों को पढ़ने-पढ़ाने में मज़ा आए। शिक्षक को अधिक समय मिलने के कारण स्वयं की शिक्षण गलतियों को सुधारने का अवसर भी मिलेगा जिससे उसमें विश्वास और हिम्मत तथा नई शक्ति का संचार हो सकेगा, जिनकी प्राथमिक स्तर पर सबसे अधिक आवश्यकता होती है और शिक्षक, शिक्षण में नए-नए प्रयोग कर सकेगा।

एकल शिक्षक ही प्रत्येक शिक्षार्थी के स्वभाव तथा उसकी ज्ञान शक्ति को जान सकता है। वह कमज़ोर, सामान्य और प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार सीखने के अवसर देगा क्योंकि उसे अनुभव द्वारा बालक के सीखने की गति और प्रत्येक की क्षमताओं का ज्ञान होने से वह एक ही पद्धति से सबको नहीं पढ़ाएगा और इस प्रकार कमज़ोर शिक्षार्थी भी अधिगम के लक्ष्य तक पहुँच जाएगा। एकल शिक्षक शिक्षार्थियों की कमियों को सुधारकर उन्हें विकास मार्ग पर आगे बढ़ने के अवसर देगा, सजा नहीं।

वर्तमान कक्षा शिक्षकों को कक्षा में पढ़ाने से आनंद नहीं आता, शिक्षार्थी भी रुचि नहीं लेते लेकिन उन्हें परीक्षा तो पास करनी ही होती है इसलिए उन्होंने और माता-पिता ने ट्यूशन की खोज की है। शिक्षक अतिरिक्त धन के लालच में कक्षा में न पढ़ाकर ट्यूशन में पढ़ाना पसंद करता है। जितने मूर्ख शिक्षार्थियों की कक्षा होगी उतने ही ट्यूशन के लिए शिक्षार्थी उसे मिल जाते हैं। वह मनोवृत्ति बना लेता है कि कक्षा में नहीं पढ़ाऊँगा तो चलेगा, ट्यूशन में पढ़ा दूँगा। लेकिन एकल शिक्षक पद्धति द्वारा ट्यूशन की मुसीबत को भी प्राथमिक स्तर पर काफी हद तक रोका जा सकता है। क्योंकि एकल शिक्षक पर पाँच वर्षों के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के परिणाम की ज़िम्मेदारी होगी जिसके आधार पर उसे पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, तो वह अपनी प्रतिभा और समय को कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने में लगाएगा।

प्राथमिक स्तर पर यदि एकल शिक्षक पद्धति को लागू किया जाए तो एकल शिक्षक के सामने रोज़ नया-नया जानने और विचारने के कारण उसमें स्फूर्ति रहेगी। वह संतुष्टि का अनुभव करेगा। वही के वही शिक्षार्थी होने से भी वह ऊबेगा नहीं, बल्कि उस माली के समान आनंद का अनुभव करेगा जो स्वयं के उगाए पौधों को रोज़ बढ़ते हुए देखकर आनंदित होता है। अतः प्राथमिक स्तर पर 'एकल शिक्षक पद्धति' शिक्षक में नवीन दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकती है जो शिक्षा को एक मज़बूत आधार देगा।

वर्तमान प्राथमिक स्तर पर एकल शिक्षक पद्धति को लागू करने में कुछ मुश्किलें भी हैं जिन्हें मिलकर दूर करके बहुत अधिक मात्रा में इस पद्धति का लाभ लिया जा सकता है। पहली मुश्किल है कि प्रथम कक्षा से पाँचवी कक्षा तक पढ़ाने के लिए शिक्षकों में योग्यता नहीं है, साथ ही उनका वेतन भी इस शिक्षण कार्य के हिसाब से कम है। यदि शिक्षकों को योग्यता बढ़ाने का अवसर दिया जाए या योग्य शिक्षकों को तैनाती दी जाए और उनके वेतन में भी आवश्यक वृद्धि हो जाए और पाँच वर्ष के उनके शिक्षण कार्य के मूल्याँकन के आधार पर पदोन्नति दी जाए तो शिक्षकों को 'एकल शिक्षक पद्धति' से परहेज़ नहीं होगा।

दूसरी मुश्किल कक्षा में शिक्षार्थियों की अधिक संख्या है। लेकिन यदि कक्षा को आधा कर दिया जाए तो 'एकल शिक्षक पद्धति' से अधिकतम लाभ मिल सकता है। भले ही छोटी कक्षा पर एक शिक्षक रखने से अधिक खर्च होगा लेकिन यदि शिक्षक की नियुक्ति अच्छी पढ़ाई की दृष्टि से की जाए और आर्थिक व्यय की तुलना में 'एकल शिक्षक पद्धति' से होने वाले लाभ का प्रश्न महत्वपूर्ण हो तो अधिक व्यय भी भारी नहीं लगेगा। मेरी दृष्टि में आर्थिक व्यय की तुलना में प्राथमिक शिक्षा में सुधार के स्तर पर मिलने वाला लाभ महत्वपूर्ण होना चाहिए। तभी वास्तव में शिक्षा के स्तर में सुधार आ सकता है।

तीसरी मुश्किल कक्षा के बीच में प्रवेश लेने वाले शिक्षार्थियों की है, उन्हें 'एकल शिक्षक पद्धति' वाली कक्षा में प्रवेश नहीं दिया जा सकता क्योंकि ऐसी स्थिति में न तो एकल शिक्षक ही उन्हें समझ आएगा और न ही शिक्षार्थी कक्षा में व्यवस्थित महसूस करेंगे। यदि उन्हें बीच में प्रवेश दिया गया तो ''लंबे बाँस पर अगर ठिंगना चढ़ेगा तो मरेगा या फिर बीमार पड़ेगा'' जैसी कहावत को साकार करने जैसा होगा। ऐसे शिक्षार्थियों के लिए एक अलग फुटकर विभाग रखा जा सकता है। भले ही रखे जाने वाले शिक्षकों का खर्च बढ़ेगा लेकिन हमें उस व्यय से ज्यादा 'एकल शिक्षक पद्धति' से मिलने वाले लाभ को देखना होगा।

दूसरी ओर प्राथमिक शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षकों का चयन केवल लिखित परीक्षा के आधार पर न किया जाए बल्कि 'शिक्षक चयन प्रक्रिया' में वास्तविक कक्षा में शिक्षण अधिगम के अवलोकन को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही शिक्षक, शिक्षण-कार्य केवल अपना व्यवसाय समझ कर न करें बल्कि अपनी ज़िम्मेदारी समझें। उन्हें इस बात का आभास होना चाहिए कि वे देश के भविष्य का निर्माण कर रहे हैं केवल शिक्षण नहीं।

यदि एकल शिक्षक को अपने कार्य में स्वतंत्रता और मार्गदर्शन दिया जाए तथा प्रेरित किया जाए, उसका वेतन आकर्षक हो, उस पर विश्वास जताया जाए, माता-पिता का सहयोग प्राप्त हो तो शिक्षक पूर्ण निष्ठा से अपना शिक्षण कार्य पूरा कर सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा अधिकारियों तथा शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर प्राथमिक शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्यशालाओं का

आयोजन किया जाए तो एकल शिक्षक को प्रोत्साहन प्राप्त होगा और वह शिक्षण की इस नई पद्धति में रुचि लेगा।

यदि प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षकों की संख्या कम करके एकल शिक्षक और सहयोगी निरीक्षकों को तैनाती दी जाए और विद्यालय में एकल शिक्षक पद्धति से काम शुरू करने में कल्पनाशील शिक्षा अधिकारी का सहयोग प्राप्त करके शुरुआत की जाए तो इस पद्धति से होने वाले लाभों को साकार किया जा सकता है।

संदर्भ

दवे, दीनानाथ. 2001. *प्राथमिक विद्यालय की शिक्षण पद्धतियाँ.* गीतांजली प्रकाशन, जयपुर.

दवे, रमेश. 2008. *शिक्षा – सोचना या सूचना.* शिवम् प्रकाशन, इलाहाबाद.

बधेका, गिजुभाई. 2004. *ऐसे हों शिक्षक.* गीतांजली प्रकाशन, जयपुर.